29/04/2020

Sub – "Work Education, Gandhiji's Nai talim & Community Engagement."

रचनात्मकवाद
Constructivism.

आधुनिक काल के महान् विचारक और शिक्षा शास्त्री जॉन ड्यूवी ने अधिगम के सम्बन्ध में दो तथ्यों का विश्लेषण किया। एक यह कि व्यक्ति समाज की सामाजिक क्रियाओं में भाग लेते हुए स्वयं सीखते हैं और दूसरा यह कि जब किसी व्यक्ति के सामने कोई समस्या आती है तो वह उसका समाधान खोजने लगता है और इस प्रकार अपने ज्ञान में वृद्धि करता है। ड्यूवी ने इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर समस्या समाधान विधि का विकास हुआ। इस विधि में छात्र अपने पाठ से संबन्धित समस्याएँ छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है। समस्या का चयन होने के बाद छात्र अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार उनके समाधान में लग जाता है। इसमें छात्र क्रिया करके समस्याओं का हल करना सीखते हैं। ड्यूवी के शिष्य किलपैट्रीक ने अपने गुरु जॉन ड्यूवी के शिक्षण सिद्धांतों के आधार पर योजना विधि का निर्माण किया। इस विधि में समस्याएँ छात्र को क्रिया के लिए प्रेरित करती हैं और चिंतन को जन्म देती हैं। स्वेच्छा से बालक क्रिया में संलग्न होकर समस्या का समाधान ढूँढता है और इस प्रकार का प्रयोग तथा स्वानुभव के माध्यम से ज्ञान की उपलब्धि करता है। इन विधियों में छात्र स्वयं के प्रयास से नए ज्ञान को प्राप्त करते हैं अर्थात नए ज्ञान की रचना करते हैं इसलिए इन्हें रचनावादी विधियाँ कहा जाता है।

ड्यूवी के बाद पियाजे ने बतलाया कि संज्ञान व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ समायोजित होने के लिए एक आवश्यक तत्व है। जन्म के समय बालक के अन्दर केवल एक नैसर्गिक क्षमता

विद्यमान होती है। आयु और परिपक्वता में वृद्धि होते रहने के कारण उसके भीतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विकास होता रहता है। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया — I. संवेदी पेशीय अवस्था

II. प्राक् संक्रियात्मक अवस्था

III. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

IV. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था।

परिभाषा — अनिता वुलफोक के अनुसार, "रचनात्मकवाद आगम का वह अध्ययन है जो व्यक्तियों में समझ और ज्ञान की रचना अनुभवों के आधार पर करता है।"

रमन बिहारी लाल के अनुसार, "रचनात्मकवादी सिद्धांत सीखने का वह सिद्धांत है जो यह मानता है कि व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रिया द्वारा अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान के निर्माण करते हैं और फिर इस नए ज्ञान के आधार पर अपने पूर्व ज्ञान को पुनर्गठित करते हैं।"

रचनात्मकवाद के तत्व ⇒ टॉलमैन और हार्डी ने रचनात्मवादी अधिगम के लिए पाँच तत्वों का होना आवश्यक माना है —

I. पूर्व ज्ञान को क्रियाशील करना
II. नए ज्ञान को प्राप्त करना
III. नए ज्ञान को समझना
IV. नए ज्ञान का प्रयोग करना
V. नए ज्ञान का प्रतिक्षेपन करना

Scanned with CamScanner